मणिपुर में स्वागत समारोह के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

इम्फाल, 11 मार्च, 2011

देवियो और सज्जनो,

मुझे, इस सुन्दर राज्य के निवासियों के बीच आकर बहुत खुशी हो रही है। इस स्वागत समारोह में, गर्मजोशी से किए गए स्वागत से, मैं अभिभूत हूं और मणिपुर के लोगों की शांति, समृद्धि तथा उन्नति के लिए अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

मुझे खासकर, सूचना प्रौद्योगिकी पार्क की आधारशिला रखते हुए तथा स्टेट वाइड एरिया नेटवर्क का शुभारंभ करते हुए बहुत खुशी हो रही है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग से जुड़ी, इन दोनों परियोजनाओं से पता चलता है कि यह राज्य विकास के लिए तथा बेहतर शासन प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकियों का फायदा उठाने के लिए कृतसंकल्प है। 21वीं शताब्दी एक ज्ञान आधारित विश्व है, जहां उन्नति के नए निर्णायक, नई प्रौद्योगिकियां तथा सूचना प्रणालियां हैं। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध कराई गई संयोजकता ने देश में तथा पूरी दुनिया में, लोगों, संस्थानों तथा विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने में प्रमुख भूमिका निभाई है। इससे दूरियां कम करने के साथ ही, व्यापार तथा सेवाएं प्रदान करने के नए तरीकों की शुरुआत हुई है। मुझे यकीन है कि मणिपुर सूचना प्रौद्योगिकी का केन्द्र बनने के लिए अपनी मेधावी जनता के हुनर से लाभ उठा सकेगा।

मणिपुर से बहुत सी यादें तथा भावनाएं जुड़ी हुई हैं। मणिपुर ऐसी विविधतापूर्ण धरती है, जहां पर सदियों से विभिन्न जीवंत संस्कृतियों वाले समुदाय तथा जनजातियां साथ-साथ, सद्भावना के साथ रहते रहे हैं। इनमें से हर-एक समुदाय तथा जनजाति ने अपने अलग-अलग रीति-रिवाजों, परंपराओं, गीतों और नृत्यों, लोक-कथाओं तथा कहावतों से, देश की सामासिक संस्कृति को समृद्ध किया है। मणिपुर के नृत्यों की मोहकता तथा मणिपुर के ढोलों की गूंज ने देश के बहुत से लोगों के हृदयों को जीता है। हमें आपकी समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत पर गर्व है। हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने, मणिपुर को भारत की मणि का नाम दिया था। मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में, यह बहुमूल्य मणि और भी अधिक चमकदार तथा कांतिमान होगी।

मणिपुर की जनता ने, खेलों में उत्कृष्टता हासिल की है। मैं, झारखंड में आयोजित 34वें राष्ट्रीय खेल-2011 में देश में, सबसे अधिक पदक जीतने के लिए राज्य को बधाई देती हूं। मुझे विश्वास है कि मणिपुर विश्वस्तरीय खिलाड़ी तैयार करके राज्य तथा देश का नाम ऊंचा करता रहेगा और इसकी जनता देश के विकास में सहयोग देती रहेगी। इसी संदर्भ में, मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगी कि केवल शांति और सुकून के माहौल में ही सतत् विकास हो सकता है। इसलिए, मैं लोगों से सौहार्द बनाए रखने, हिंसा छोड़ने तथा देश के विकास और प्रगति के लिए राष्ट्र की मुख्य धारा के प्रयासों में शामिल होने का आह्वान करती हूं। जब लोग संगठित होकर, मिल-जुलकर काम करते हैं तो बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

मणिपुर संभावनाओं से भरपूर, एक बहुत सुंदर स्थान है। इसके पर्वतों और घाटियों ने, इसकी नदियों और लोक्ताक झील सहित इसकी झीलों ने, इसके हरे-भरे वनों और पेड़ों ने, सिरोई लिली जैसे इसके विभिन्न प्रकार के हैरतअंगेज फूलों ने तथा संगाई हिरण जैसे इसके पशुओं ने इसे एक अलग पहचान दी है। जैसे-जैसे हम विकास की ओर बढ़ते हैं, इसके साथ ही, आपकी परंपराओं को बनाए रखने और महान जैव-विविधता को बचाए रखने के प्रयास होने चाहिए।

विकास के टिकाऊ होने के लिए जरूरी है कि अवसंरचनात्मक आधार अच्छा हो। सड़कों और पुलों, बिजली, सिंचाई, जल आपूर्ति तथा खेल-कूद के क्षेत्रों में निर्माण कार्य शुरू करवाए गए हैं। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ये परियोजनाएं समय पर पूरी हों। मुझे बताया गया है कि राज्य ने अपनी प्रशासनिक अवसंरचना को मजबूत करने पर भी कार्य शुरू किया है। राज्य विधानसभा, उच्च न्यायालय तथा राज्य सचिवालय के साथ-साथ जिला स्तर पर लघु-सचिवालयों के भवनों का निर्माण करवाया जा रहा है। इसका परिणाम होगा कि प्रशासन लोगों तक पहुंचेगा, ताकि उनकी परेशानियों और समस्याओं को बिना देरी दूर किया जा सके।

सबसे पहले, विकास का लक्ष्य, लोगों के जीवन के स्तर में सुधार लाना तथा उनको सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाना, होना चाहिए। मुझे बताया गया है कि जनता का बड़ा हिस्सा जीविका के लिए कृषि तथा इससे जुड़े अन्य कार्यों पर निर्भर है। ऐसे माहौल में, सर्वांगीण प्रगति का एक रास्ता, बेहतर फसल पद्धति को अपनाकर, बेहतर उपज देने वाले बीजों का उपयोग करके तथा वैज्ञानिक जल प्रबंधन करके, कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी करना, होना चाहिए। एग्रो-प्रोसेसिंग यूनिटें, जिनमें

छोटी घरेलू यूनिटें तथा सहकारिता यूनिटें भी शामिल हैं, कृषि उत्पादों में मूल्य संवर्धन कर पाएंगी और उन्हें बाजारों तक पहुंचाने के लिए ढुलाई में आसानी होगी। इसलिए, मैं कटाई के बाद के फसल प्रबंधन और प्रसंस्करण पर ज्यादा ध्यान देना चाहूंगी, ताकि कृषि को अधिक आय पैदा करने वाला कार्यकलाप बनाया जा सके। मुझे विश्वास है कि, अपने उद्यमशील नजरिए के कारण मणिपुर की जनता इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे आएगी।

उत्पादक तथा सर्जनात्मक मानव संसाधनों के सृजन के लिए, एक मजबूत शिक्षा प्रणाली की जरूरत होती है, जो सभी को शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने की जरूरत को पूरा करे और जिसमें ऐसे समर्पित अध्यापक हों, जो कि अपने छात्रों को न केवल ज्ञान दें वरन् अच्छी मूल्य प्रणाली भी प्रदान करें। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से युवाओं को समुचित रोजगार प्राप्त करने और भावी चुनौतियों का सामना करने में सहायता मिलेगी। शिक्षित युवाओं के बीच स्व-रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए राज्य सरकार को रोजगार सृजन तथा कौशल विकास कार्यक्रमों का इस तरह से कार्यान्वयन करने पर जोर देना चाहिए, जिससे कि ऐसे कौशलों का विकास हो जिनकी राज्य में जरूरत हो। ऐसे युवा लड़के और लड़कियां, जिन्हें अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त है, अपने ज्ञान का, परिवारों, समुदायों, देश तथा मानवता की सेवा में, यथासंभव, अच्छे से अच्छा उपयोग कर सकते हैं।

शिक्षा के साथ ही, पर्याप्त तथा सुलभ स्वास्थ्य सुविधाओं की प्राप्ति भी जरूरी है। जवाहर लाल नेहरू आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना, जिसने अपना पहला शैक्षणिक सत्र पिछले वर्ष शुरू किया है, चिकित्सा सुविधा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। मैं चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों से यह आग्रह करूंगी कि वे अपने कार्य को समाज की सेवा के रूप में अपनाएं। आपातकालीन मातृत्व सुविधा मुहैया कराने के लिए, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप जैसे, राज्य के प्रयास, अच्छे हैं, परंतु इन प्रयासों को विस्तृत मातृ-बाल सुविधा कार्यक्रम से जोड़ा जाना चाहिए। प्रगति के संतुलित और टिकाऊ होने के लिए बच्चों और महिलाओं का कल्याण अनिवार्य है।

आज कुछ देर पहले, मैं राज्य सामाज कल्याण परिषद के अध्यक्ष तथा मणिपुर महिला विकास निगम के अध्यक्ष से तथा महिला स्वयं-सहायता समूहों से मिली हूं। महिलाओं के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता सराहनीय है। मणिपुरी महिलाओं को अपनी प्रतिभा तथा दृढ़ता के लिए जाना जाता है। मुझे बताया

गया है कि हथकरघा तथा हस्तशिल्प के क्षेत्र में महिलाओं की कलाकारी तथा हुनर देखने के लिए ख्वैरमबंद बाजार जाना ही काफी है, जो कि केवल महिलाओं द्वारा चलाया जाने वाला बेजोड़ आई एम ए बाजार है। मैं स्वयं-सहायता समूह आंदोलन के और सशक्त किए जाने तथा महिलाओं संबंधी मुद्दों पर और सघन रूप से कार्य करने पर जोर देना चाहूंगी। मणिपुर में महिलाओं का सहकारिता के आधार पर काम करना कोई नई बात नहीं है। बताया गया है कि प्राचीनकाल से ही, यहां मारुप नामक सामाजिक-आर्थिक सहकारिता प्रणाली मौजूद थी, जो कि एक तरह का स्वयं सहायता समूह है। इसमें एक जैसी आर्थिक जरूरतों वाला समूह किसी आर्थिक गतिविधि को शुरू करता है और वह उसके निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीधा भाग लेता है और इसके लाभ का समानतापूर्ण ढंग से बंटवारा करता है। किसी भी समाज में, महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि वह कमाई करने वाले के रूप में, मां के रूप में, बेटी के रूप में और बहन के रूप में, समाज में बदलाव पर भारी असर डालती है। नशीली दवाओं का सेवन अथवा एचआईवी/एड्स जैसे सभी मुद्दों पर बड़े संवेदनात्मक ढंग से कार्य किए जाने की जरूरत है और इस तरह के सामाजिक मुद्दों पर कार्य करने में महिलाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। मेरी यह भी इच्छा है कि मणिपुर की महिलाएं, पूरे राज्य में तथा समाज और समुदाय के सभी वर्गों के बीच मित्रता तथा सौहार्द का माहौल तैयार करने के लिए पहल करें।

मैं यह भी मानती हूं कि पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों के साथ ही, मणिपुर में भी विकास की बहुत संभावनाएं हैं। उनका आपसी क्षेत्रीय एकीकरण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ उनका क्षेत्रीय सहयोग न केवल भारत की लुक-ईस्ट नीति को बढ़ावा देने के लिए, वरन् मणिपुर सहित, इस पूरे क्षेत्र में लाभ लाने के लिए भी उपयोगी रहेगा। मणिपुर के पास समृद्ध प्राकृतिक संसाधन हैं और इसकी मेधावी जनता इसकी उन्नति के लिए ठोस आधार प्रदान करती है। मणिपुर निश्चय ही उम्मीद तथा विश्वास के साथ भविष्य की ओर देख सकता है।

मैं एक बार फिर इस जन-स्वागत समारोह के लिए मणिपुर की जनता को धन्यवाद देती हूं और उनको तथा राज्यपाल और मुख्यमंत्री को शुभकामनाएं देती हूं। मैं एक शांतिपूर्ण, प्रगतिशील तथा समृद्ध मणिपुर की दिशा में सफलता की भी कामना करती हूं।

धन्यवाद,

जय हिंद।